

Registered with the Registrar of Newspapers of India : R.N. DELENG/2002/8668

December - 2014 & January - 2015

VIPNET NEWS

IYL 2015
INTERNATIONAL
YEAR OF LIGHT

VOL-12,13

NO.12,1



Price: Rs.2/-

A Monthly Newsletter of Vigyan Prasar Network of Science Clubs - VIPNET

EDITORIAL

Dear Vipnetians,

Greetings from Vigyan Prasar. We regret the delay in bringing the combined issue of VIPNET newsletter for the months of December 2014 and January 2015. There were certain unavoidable circumstances. As you are aware, we have adopted the policy of bringing forth articles based on activities, shortage of such articles was one of the major reasons for delay. Nonetheless, it is expected to be streamlined in coming months. The current issue is the last issue which carries the printed re-registration form. You are requested to make use of this opportunity and obtain your new Unique Authorisation Number from us. We also appeal to you to spread the word to the clubs in your vicinity. We are delighted with the response we have received from across the country in our initiative to re-register the clubs. The re-registered clubs are enlisted on our website www.vigyanprasar.gov.in. We highly appreciate the work of these active and vibrant clubs. Vigyan Prasar is in the process of devising policies to strengthen the VIPNET clubs through consistent feedback and continuous programme delivery.

The year 2015 will be celebrated as the **International Year of Light and Light-based Technologies (IYL 2015)**. It was proclaimed in United Nation's 68th general assembly in the year 2013. In the context of IYL-2015, our newsletter will have a special column for this year. The column will focus on the history, concepts, developments and contributions in the field of light and light based technologies. It is impossible to cover 'light' in limited issues of the newsletter printed in a year, yet we will focus on addressing the major milestones.

The present issue includes articles on prestigious awards and their recipients in the field of Mathematics, Ganga and its biodiversity, and Viscosity. Each article is followed by activities which can make you a winner! Keep reading, keep performing and keep winning.

Dr Arvind C. Ranade
rac@vigyanprasar.gov.in

INSIDE

» Recognition in Mathematics
» Exploring Science - Viscosity

» गंगा की जैव विविधता
» Re-Registration Form



Recognition in Mathematics

Exploring Science - Viscosity



INSIDE

Education is the best friend. An educated person is respected everywhere. Education beats the beauty and the youth.
Chanakya

संपादकीय

प्रिय विपनेट सदस्यों,

विज्ञान प्रसार की ओर से अभिवादन। हमें दिसम्बर 2014 और जनवरी 2015 के संयुक्त समाचार पत्र के देरी से प्रकाशित होने पे खेद है। कुछ अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण ऐसा हुआ। जैसा कि आप सब जानते है हमने गतिविधियों पर आधारित लेख आगे लाने की नीति को अपनाया है परन्तु इस तरह के लेखों की कमी, देरी के प्रमुख कारणों में से एक है। बहरहाल इसके आने वाले महीनों में सुव्यस्थित होने की उम्मीद है। वर्तमान अंक आखिरी अंक है जिसमें पुनः पंजीकरण फॉर्म प्रकाशित है। इसलिए आप सबसे निवेदन है कि आप इस अवसर का लाभ उठाये और अपने अद्वितीय प्राधिकरण संख्या हमसे प्राप्त करें। हम आपसे यह भी आग्रह करते है कि यह जानकारी आप अपने आस-पास के क्षेत्रों में कार्यरत क्लबों तक भी पहुंचाए। क्लबों को पुनः पंजीकरण कराने की हमारी पहल के जवाब में हमें जो प्रतिक्रिया पूरे देश से प्राप्त हुई उससे हम काफी उत्साहित है। पुनः पंजीकृत क्लबों की सूची हमारी वेबसाइट www.vigyanprasar.gov.in पे भी उपलब्ध है। हम सभी सक्रिय और जीवांत क्लबों के कार्यों की सराहना करते हैं। विज्ञान प्रसार अनुरूप प्रतिक्रिया और निरंतर कार्यक्रम प्रस्तुती के माध्यम से विपनेट क्लबों को मजबूत करने के लिए नीतियों को तैयार कर रहा है।

वर्ष 2015 अंतर्राष्ट्रीय प्रकाश और प्रकाश आधारित प्रौद्योगिकियों (IYL 2015) वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। यह वर्ष 2013 में संयुक्त राष्ट्र की 68 महासभा में घोषित किया गया था। IYL 2015 के संदर्भ में, हमारे समाचार पत्र में इस वर्ष के लिए एक विशेष पत्रभाग होगा। यह पत्रभाग प्रकाश और प्रकाश आधारित प्रौद्योगिकी के क्षेत्र का इतिहास, अवधारणाओं, घटनाओं और योगदान पर ध्यान केंद्रित करेगा। एक वर्ष में मुद्रित समाचार पत्रों के माध्यम से 'प्रकाश' के बारे में जानकारी देना असंभव है, फिर भी हम प्रमुख मील का पत्थर साबित हुई जानकारी को संबोधित करने पर ध्यान देंगे।

वर्तमान अंक में गणित के प्रतिष्ठित पुरस्कारों और उनके प्राप्तकर्ताओं, गंगा और उसकी जैव विविधता और चिपचिपापन से संबंधित लेख शामिल किए गए है। प्रत्येक लेख के साथ गतिविधियां दी गई है जो आपको विजेता बना सकती है। पढ़ते रहें, प्रदर्शन करते रहें और जीतते रहें।

■(अनुवाद: विपिन सिंह रावत)



RECOGNITION IN MATHEMATICS

Rintu Nath

rnath@vigyanprasar.gov.in

All of us know that there is no Nobel Prize for Mathematics. However there are number of equivalent prizes to recognise talent in Mathematics. Three prestigious prizes in the field of Mathematics are listed here.

Fields Medal

It is considered as the highest honour in Mathematics and awarded only once in four years. The Fields medal is awarded to a minimum of two and a maximum of four mathematicians under 40 years of age. Its purpose is to give recognition and support to young mathematical researchers who have made major contributions.

The Fields Medal is officially known as International Medal for Outstanding Discoveries in Mathematics. The medal is awarded by International Mathematical Union (IMU) during International Congress that takes place every four years. The Fields medal was instituted by the Canadian mathematician John Charles Fields and was first awarded in 1936.



Arthur Avila



Manjul Bhargava



Martin Hairer



Maryam Mirzakhani

Fields Medal for the year 2014 was awarded to four mathematicians. These four mathematicians are Brazilian Arthur Avila; Canadian-American Manjul Bhargava, who is of Indian origin; Austrian Martin Hairer and Iranian Maryam Mirzakhani. [To know more you may visit <http://www.mathunion.org/general/prizes/2014>]

Abel Prize

Named after Norwegian mathematician Niels Henrik Abel (1802–1829), the award was established in 2001 by the Government of Norway. The prize is given every year to one or more mathematicians. Prize money is about one million US dollar. Abel prize for the year 2014 was awarded to Yakov G. Sinai of Princeton University, USA, and Landau Institute for Theoretical Physics, Russian Academy of Sciences.



Yakov G. Sinai

Clay Millennium Prizes

The Millennium Prize Problems are seven problems in mathematics that were stated by the Clay Mathematics Institute in 2000. As of November 2014, six of the problems

remain unsolved. A correct solution to any of the problems results in a US \$1,000,000 prize (sometimes called a Millennium Prize) being awarded by the institute. The Poincaré conjecture was solved by Russian mathematician Grigori Perelman, but he declined the award in 2010.

[To know more about the millennium prize problems you may visit http://en.wikipedia.org/wiki/Millennium_Prize_Problems]



गंगा की जैव-विविधता

ओबैदुर रहमान
obaidurrahman786786786@gmail.com

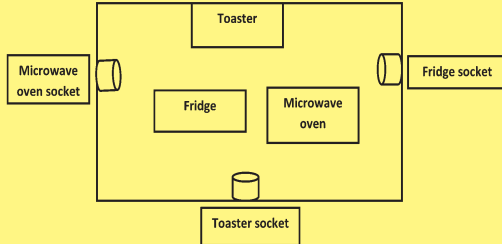
गंगा भारत की जीवन रेखा है। यह नदी 4255 मीटर की ऊंचाई पर हिमालय में स्थित गोमुख गुफा से निकलकर लगभग 2700 कि.मी. की यात्रा उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड एवं पश्चिमी बंगाल राज्यों में तय करती है और अंततः गंगा सागर द्वीप के पास बंगाल की खाड़ी में जा मिलती है। गंगा नदी को भारतीय सभ्यता का पालक माना जाता है। भारत के लोगों के आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक विकास में गंगा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज भी विश्व की शायद ही किसी नदी के प्रति आम लोगों की इतनी आस्था हो जितनी गंगा को लेकर है।

गंगा समृद्ध जैव विविधता वाली नदी अपने 2700 कि.मी. के मार्ग में गंगा हिमालय के पहाड़ों, तराइयों, उत्तर प्रदेश, बिहार एवं पश्चिम बंगाल के मैदानी भागों एवं डेल्टा से होकर गुजरती है और फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक वास स्थानों का निर्माण करती है। अलग-अलग तरह के वास स्थानों में अलग-अलग तरह के जीव-जंतु पाए जाते हैं। यहाँ तक कि एक ही तरह के जीवों में भी काफी आनुवांशिक विभिन्नता देखने को मिलती है। इस प्रकार जैव विविधता के ख्याल से भी गंगा अति महत्वपूर्ण नदियों में से एक है। इसकी सैकड़ों छोटी-बड़ी सहायक नदियाँ इसकी जैव विविधता को और भी समृद्ध बनाती हैं। साथ ही कई जीवों की प्रजातियाँ स्थानिक हैं।

भारत में दस जैव भौगोलिक मंडल हैं, जिसमें गांगेय मैदान एक है। गंगा नदी संसार की अति उत्पादक नदियों में से एक है जिसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु पाए जाते हैं। इन जीव-जंतुओं में आर्थिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण मछलियाँ हैं, जिन पर लाखों मछुआरों की जीविका निर्भर है। शायद यही कारण है कि हम लोगों में से अधिकांश लोग गंगा की जैव विविधता के रूप में मुख्यतः मछलियों को ही जानते हैं। सर्वप्रथम-1822 ई. में अंग्रेज वैज्ञानिक हैमिल्टन बुकानन ने गंगा की मछलियों के बारे में एक दस्तावेज तैयार किया और उसे एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। शायद गंगा की जैव विविधता के बारे में यह पहला दस्तावेज है। इस दस्तावेज में हैमिल्टन ने गंगा एवं उसकी सहायक नदियों में 268 प्रजाति की मछलियों का सचित्र वर्णन किया है। इस दस्तावेज के बाद 19वीं शताब्दी और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अनेकों लेख, शोधपत्र तथा पुस्तकें प्रकाशित की गईं। 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में मछलियों के अलावा अन्य जीव-जंतुओं के बारे में भी अध्ययन किया गया और प्रलेख तैयार किया गया। आज भी मछलियों पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जा रहा है परंतु हाल के कुछ दशकों में मत्स्य वैज्ञानिकों का ध्यान अन्य जीवों पर भी गया है।

ACTIVITY-1

Grab a CD
 Relativity



You have to connect 'Toaster', 'Fridge' and 'Microwave oven' to their corresponding sockets such that cables do not cross each other. This may not be difficult in a real kitchen where cable will actually be laid through the walls. But in a scenario like the above, where you are allowed to lay cables only through the floor, the solution needs some thinking. So – rattle your mind and share the solution with us and your friends. [Answer in next issue] [Source: Professor Stewart's Cabinet of Mathematical Curiosities, Author: Ian Stewart Publisher: Profile Books Limited]

Complete the activity and send the result at vipnet@vigyanprasargov.in with subject title 'Activity-1' (Month) OR send the answer in an envelope entitled VIPNET 'Activity-1' (Month) to Vigyan Prasar,A-50, Institutional Area, Sector-62, Noida-201 309 (U.P).

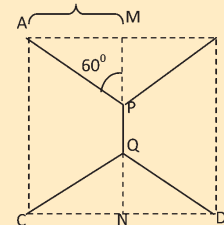
Answer: Activity - 1 (Aug-Sep, 2014)

Winner :

1. Girish R. Khot (Karnataka)
2. Sunil Kumar Thakur (Bihar)

For shortest route,
 50 km

APB = 120°
 From triangle AMP



$$\frac{AM}{AP} = \sin 60^\circ$$

$$AP = \frac{AM}{\sin 60^\circ} = \frac{50}{0.866} = 57.73 \text{ km}$$

$$\text{And } \frac{AM}{MP} = \tan 60^\circ$$

$$MP = \frac{AM}{\tan 60^\circ} = \frac{50}{\sqrt{3}} = 28.86 \text{ km} = QN$$

Now, AP = BP = QC = QD = 57.73 km

And, MP + PQ + QN = 100 km

Therefore, PQ = 100 - (MP + QN)

$$= 100 - (28.86 + 28.86)$$

$$= 42.26 \text{ km}$$

Length of the road = AP + BP + QC + QD + PQ

$$= 4 \times 57.73 + 42.26 = 273.18 \text{ km}$$

इन जीवों में मुख्य रूप से सूक्ष्म और अन्य अकशेरुकी प्राणी हैं जो मछलियों के आहार हैं तथा ये सभी मिलकर गंगा में आहार श्रृंखला का निर्माण करते हैं। इनमें से मुख्यतः शैवाल, वनस्पति प्लवक, प्राणी प्लवक तथा नितल जीव समूह होते हैं।

1970 के दशक के बाद वन्य प्राणियों की ओर भी सरकार, समाज एवं वैज्ञानिकों का ध्यान गया। तब से नदियों में रहने वाले वन प्राणी, खासकर कछुओं, घड़ियाल एवं मगरमच्छ तथा चिड़ियों पर भी ध्यान दिया जाने लगा क्योंकि इन जीवों की आबादी में काफी तेजी से ह्रास हो रहा था। कुछ समय से गंगा नदी में अनेक जीव देखने को नहीं मिलते हैं। मुलायम कवच वाले कछुओं की भी यही दशा है। ये कछुए गंगा में फेंके जाने वाले पशुओं की लाशों को खाकर गंगा को साफ रखने में काफी मदद करते थे। परन्तु मनुष्य की लोलुपता ने इन कछुओं को ही चट कर लगभग समाप्त कर दिया। दुःख तो इस बात का है कि हमारे समाज में प्रबुद्ध एवं सबसे उच्च स्तर पर बैठे लोग एवं जन प्रतिनिधियों ने भी इन कछुओं को नहीं बख्शा। फलस्वरूप, मुलायम आवरण वाले ये कछुए अब गंगा में बिरले ही देखने को मिलते हैं। गंगा की स्वतः शुद्धिकरण की शक्ति घट रही है, जबकि आये दिन गंगा दूषित हो रही है।

गंगा का सोंस खतरे में

गंगा नदी में एक और अति महत्वपूर्ण स्थानिक एवं विरल जानवर पाया जाता है, जिसे साधारण बोलचाल की भाषा में सोंस कहा जाता है। यह पानी में पाया जाने वाला डॉल्फिन है। यह एक स्तनधारी प्राणी है परन्तु जानकारी के अभाव में अधिकांश लोग सोंस को मछली समझ लेते हैं। यहां जानने योग्य बात यह है कि विश्व में डॉल्फिन, व्हेल एवं पोरोपोआइज की लगभग 80 प्रजातियां हैं जिसमें सिर्फ चार ही प्रजातियां मीठे जल में पाई जाती हैं और उसमें एक है—गंगा का सोंस। भारतीय इतिहास में इसका जिक्र लगभग 2300 वर्ष पूर्व सम्राट अशोक के जमाने से मिलता है। बाबरनामा में भी सोंस को एक लघु रंग चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है परन्तु वैज्ञानिक जगत में इस प्राणी की खोज 1801 ई. में विलियम रौक्सवर्ग ने कोलकत्ता की हूगली नदी से की थी। बाद में जॉन एंडरसन ने 1879 में सोंस के बारे में एक विस्तृत अध्ययन प्रतिवेद प्रकाशित किया। सोंस गंगा एवं इसकी सहायक नदियों में, हिमालय की तराई से गंगा सागर तथा सुन्दर—वन डेल्टा तक पायी जाती है। परन्तु हाल के वर्षों में इसकी संख्या में तेजी से ह्रास हुआ है और वर्तमान में सम्पूर्ण विस्तार क्षेत्र में इसकी संख्या सिमटकर लगभग 2500 रह गई है। इस स्तनधारी प्राणी की मादा एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है। शिशु को लगभग 9—10 महीने गर्भ में रखती है तथा बच्चे को 4—6 महीने तक स्तनपान कराती है।

सोंस के अलावा गंगा में पाए जाने वाले अन्य स्तनधारी प्राणियों में उदबिलाव, मछली पकड़ने वाली बिल्ली इत्यादि प्रमुख

हैं। इन वन्य प्राणियों का अस्तित्व भी नदी से लगभग समाप्त हो चुका है।

पिछले दशक के दौरान वैज्ञानिकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गंगा में 2000 से अधिक तरह के जीव—जंतुओं की प्रजातियां पाई जाती हैं जिसमें 375 जाति की मछलियां हैं। प्रायः हर वर्ष कुछ न कुछ नई प्रजातियों की खोज भी वैज्ञानिकों के द्वारा की जा रही है परन्तु जल में रहने वाली कई प्रजातियां तेजी से विलुप्त हो रही हैं।

गंगा के जीवों को बचाने के लिए सजगता आवश्यक

इन विविध जीव—जंतुओं के ह्रास या विलुप्त होने के प्रमुख कारण हैं वास—स्थान का विनाश, कुछ प्रजातियों का अतिशोषण, प्रदूषण, दियारा क्षेत्र में अधिक से अधिक खेती, नदियों पर बाँध, नदीजल का अधिक दोहन एवं शोषण, वृक्षों की कटाई, नदी तल पर गाद आदि। इस प्रकार मछलियों, कछुए, घड़ियाल, मगरमच्छ, सोंस तथा अन्य प्राणियों का अतिशोषण मानव द्वारा किया जा रहा है। फलस्वरूप गंगा की जैव—विविधता बड़ी तेजी से समाप्त होती जा रही है।

सरकार के द्वारा गंगा को प्रदूषणमुक्त करने के लिए कुछ कारगर कदम उठाए गए हैं परन्तु यह भी तभी संभव है जब इसमें आम जनता की सहभागिता हो और उसका सहयोग सरकार से प्राप्त हो। वास—स्थान विनाश के अन्य कारकों को भी कम करने में आम जनता मुख्य भूमिका निभा सकती है और इसके लिए अतिआवश्यक है आम लोगों के बीच इन समस्याओं के प्रति जागृति पैदा करना। पर्यावरण शिक्षा इस कार्य में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। खास प्रजाति के जीवों के शोषण को भी कम करने में पर्यावरण शिक्षा का योगदान होगा। सिर्फ सरकारी तंत्र या कुछ गिनी—चुनी और सरकारी संस्थाएं इस कार्य को पूरा नहीं कर सकती हैं। अतः हम सब का कर्तव्य है कि गंगा की जैव—विविधता की रक्षा में अपना हाथ बटाएँ एवं अपने—अपने स्तर पर जो कर सकते हैं, करें।

ACTIVITY-2

Grab a CD
Transit of Venus

1. भारत के मानचित्र पर गंगा नदी को चिह्नित करें।
2. गंगा नदी की जैव विविधता की सूची बनाएं।
3. गंगा नदी के दुर्लभ जीव—जंतुओं के नाम लिखें।
4. सोंस जंतु के प्रमुख लक्षण बताएं।
5. गंगा नदी के जीवों की रक्षा के लिए क्या कदम, उठाये जा सकते हैं, सुझाव दें।

Complete the activity and send the result at vipnet@vigyanprasar.gov.in with subject title 'Activity-2' (Month) OR Send the answer in an envelope entitled VIPNET 'Activity-2' (Month) to Vigyan Prasar, A-50, Institutional Area, Sector-62, Noida-201309 (U.P.).



EXPLORING SCIENCE : VISCOSITY

Puneeta Malhotra
malhotrasp25@gmail.com

The pain relief gel and ointment we use is highly viscous. These ointments are intentionally made thick so as to prevent them from flowing from the intended



area of use. What will happen if the pain relief ointment is as free flowing as your cough syrup?

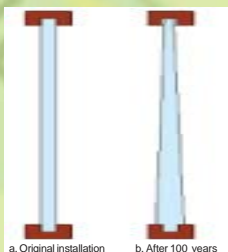


Why is your mother so worried about the right consistency of the batter for making uttapam or dosa or chila or even the tasty pakoras? The right thickness of the batter ensures proper spreading of the batter

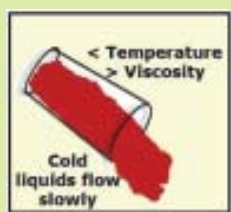
on the hot plate (tava) leading to tasty preparation.

Why do window panes of the old buildings appear thicker at the bottom than at the top?

Why do glass panes of old buildings appear milky? Did you know that glass is a highly viscous liquid! It is a super cooled liquid and flows at a very slow rate so after a number of years we observe milkiness in glass panes.



Liquids like honey, glycerine flow slowly while water, alcohol flow rapidly. Liquids do not flow at the same speed. There is a friction or internal resistance which affects the flow of a liquid.



Imagine different layers of liquid in contact with each other are moving past each other. There is a force of friction between the liquid layers. This decreases the speed of flow of the liquid. The liquids which have strong intermolecular forces have high internal resistance and flow slowly.

The internal resistance to flow of a liquid is called VISCOSITY.

Viscosity decreases with increase in temperature. On increasing temperature, the molecules start moving faster. The increased kinetic energy overcomes the intermolecular forces of attraction making the flow of liquid faster.

When we pour liquids they splash. Why the splashes are different for different liquids?

Liquids with higher viscosities make smaller splashes when poured with the same velocity as liquids with lower viscosity.. Higher viscosity is due to strong intermolecular force of attraction. It means the molecules of the liquid are held together tightly, so they splash less.



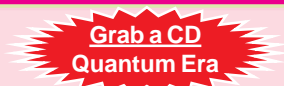
If we place our hands or feet in ice for long time, the fingers and toes become numb. This is because Blood viscosity is **temperature** dependent. When blood gets cold, it gets “thicker” and flows at a slower rate in comparison to normal flow of

blood. Normally, blood temperature does not change much in the body. However, if a person’s hand is exposed to a cold environment and the fingers become cold, the blood temperature in the fingers will fall and viscosity increase, which will decrease blood flow in the cooled region.

Background

Viscosity refers to resistance to flow. Some liquids appear thin while others appear thick. This thickness affects their flow. In this project you’ll arrange liquids according to their viscosity.

ACTIVITY-3



Aim : - The goal of this project is to investigate how fast a ball moves through a particular liquid. This will help us know the resistance offered by different liquids.

Materials and Equipment required

- Water
- Long glass / measuring cylinder
- Motor oil
- Modelling Clay ball
- Honey
- Stop watch
- Liquid detergent
- Vegetable Oil

Experimental Procedure

1. Fill the container with water.
2. Allow the clay ball to fall through the liquid and touch the base of the glass.
3. Note the time taken for the ball to travel through liquid.
4. Repeat step 1,2 and 3 for all other liquids.
5. You can add more liquids or change the liquids in the list according to availability.
6. Use ball bearing instead of clay ball and note the time in each case.
7. Does the order of viscosity change if you use a ball bearing?

Observation Table:

Liquid in container	Time taken for the clay ball to drop (sec)	Order of viscosity	Time taken for the ball bearing to drop (sec)	Order of viscosity
Water				
Vegetable oil				
Motor Oil				
Honey				
Liquid detergent				

Conclusion and Explanation:

Answer the following questions:

How do viscosity measurements in the food industry help to maximize production efficiency and cost effectiveness?



Does the viscosity of lubricant have any effect on proper functioning of your vehicle?



Viscosity enhancers are used in ophthalmic solutions to increase their viscosity. Which substances can be used as viscosity enhancers? Why do we need to enhance viscosity of these solutions?



Complete the activity and send the result at vipnet@vigyanprasar.gov.in with subject title Activity-3' (Month) OR send the answer in an envelop entitled VIPNET 'Activity-3' (Month) to Vigyan Prasar, A-50, Institutional Area, Sector-62, Noida-201 309 (U.P.).

Published and Printed by Mrs. K. Dasgupta Misra on behalf of
 Vigyan Prasar, C-24, Qutab Institutional Area, New Delhi-110 016
 Printed at Gopsons Papers Limited, A-2 & 3, Sector-64, Noida.

Editor : Dr. Arvind C Ranade
Associate Editor : Vipin Singh Rawat
Layout & design : Babita



VIPNET
(Vigyan Prasar Network of Science Clubs)
Re-registration Form



Vigyan Prasar is in the process of re-registering existing science clubs. Therefore you are requested to fill up the prescribed form . A fresh affiliation certificate with a new Unique Authorization Number will be issued to your club with effect from December 2014. Please note: This new certificate will prevail once you receive it and the earlier one will be null and void .

- 1- Existing VIPNET Unique Authorization Number.
- 2- Year of Registration:
- 3- Name of the Club:
- 4- Name of the Coordinator:
- 5- Name of the Institution/School/Organization/Others the club is located in:

6- Designation:

7- Type of Club (Put check ✓ mark):

(a) In-School

(b) Out-of-School

8- Address for Correspondence (**Block Letters**):
.....
.....

District-

State- Pin code-

9- Contact No.:

Mobile- Landline-

10- E-mail:

11- Fax:

(It has been observed that coordinators of VIPNET club working under the authority of a school or similar administration need the approval/permission from authorities to attend training /workshop and other events organised by us. To minimize the hassle, you are requested to submit the following details, so that request can be made to concerned authority for allowing the coordinator to attend the programme.)

12- Does your club work under any authority? YES/NO

13- Authority to be Approached (complete address):
.....
.....

E-mail:..... Phone No.:.....

Date :..... Signature :

Place :.....



Fill it Place it in the envelope given and post - No postage required.



विपनेट

(विज्ञान प्रसार के विज्ञान क्लबों का नेटवर्क)

पुनः पंजीकरण फार्म



विज्ञान प्रसार प्रत्येक क्लब का फिर से पंजीकरण दर्ज करने की प्रक्रिया में है। इसलिए नीचे दिए गये फॉर्म को भरने के लिए अनुरोध है। नए अद्वितीय प्राधिकरण संख्या के साथ नए संबद्धता प्रमाण पत्र दिसंबर 2014 से फिर जारी किए जाएंगे। कृपया ध्यान दे : आपके द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद ये लागू कर दिये जायेंगे और पूर्णता प्राप्त प्रमाण पत्र रद्द कर दिये जाएंगे।

1. विपनेट अद्वितीय प्राधिकरण संख्या
2. पंजीकरण का वर्ष
3. क्लब का नाम
4. समन्वयक का नाम
5. कार्यरत संस्था / स्कूल / संगठन / अन्य जहां यह स्थित है का नाम
6. पद का नाम
7. क्लब का प्रकार (✓का निशान लगाये)
- (क) स्कूल के अंदर (ख) स्कूल के बाहर
8. पत्राचार का पता (स्पष्ट अक्षरों में)

जिला: पिन कोड:
राज्य

9. दूरभाष नं.
- मोबाईल नं. लैंडलाइन:
10. ई-मेल:
11. फैक्स :

(कई बार ये देखा गया है कि विपनेट क्लब जो कि किसी स्कूल या इसी तरह के प्रशासन के अधिकार के तहत काम कर रहे हैं उसे हमारे द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/कार्यशाला/अन्य में भाग लेने के लिए अधिकारियों से अनुमोदन/अनुमति की जरूरत होती है इस प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए यह अनुरोध किया जाता है कि निम्नलिखित विवरण को प्रस्तुत करें ताकि संबंधित अधिकारी को समन्वयक के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अनुरोध किया जा सके।)

12. क्या आपका क्लब किसी भी प्राधिकरण के तहत काम करता है। हाँ /नहीं
13. प्राधिकरण से संपर्क करने हेतू (पूरा पता)

ई-मेल फोन नं.:

दिनांक : हस्ताक्षर:
स्थान :

इसे भरे दिए गए लिफाफे में डाले और पोस्ट करें-डाक शुल्क की आवश्यकता नहीं।